तृतीय अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन"

तृतीय अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन''

विषय-प्रवेश :

नारी मानव सृष्टि की अनुपम देन है। अनादिकाल से वर्तमान तक नारी कभी आदर की पात्र रही है, तो कभी अनादर की। मानव जीवन में नारी पुरुष का अन्योन्याश्रित संबंध है। भारतीय संविधान ने स्त्री-पुरुष को समानाधिकार दे दिया है। संविधान के अनुसार कोई भी इन्सान उच्च या नीच नहीं होता है। समाज ने नारी को कभी श्रेष्ठता प्रदान की तो कभी कनिष्ठता लेकिन समानता को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी ने कहा है - ''सैद्धांतिक रूप से नर-नारी दोनों एक हैं, दोनों में समान आत्मा निवास करती है, दोनों में समान अनुभूति विद्यमान होती है। दोनों के जीवन की समान समस्याएँ होती हैं।''[1] गांधीजी का यह कथन 'शरीर भिन्न और आत्मा एक' वाली कहावत की दुहाई देता है।

मानव जाति की सभ्यता एवं सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में नर के बिना नारी तथा नारी के बिना नर अपूर्ण है। आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा और औद्योगिक क्रांति के कारण नारी जीवन में काफी परिवर्तन आ गया है। प्रारंभ में भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण तथा नारी शिक्षा के अभाव के कारण स्त्री पुरुषों के अधीन थी। ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र में प्रगति होने के कारण आधुनिक काल के उपन्यासकार नारी जागरण में नारी-शिक्षा नारी समुदाय को उन्मुक्त करने में सफल रहे हैं। रामेश्वर नारायण 'रमेश' के मतानुसार - ''नारियों में शिक्षा का ही अभाव था जिस कारण वे पुरुष वर्ग के समक्ष नतमस्तक थी। किन्तु जैसे ही शिक्षा का प्रचार हुआ प्राय: नारियाँ शिक्षित हुई और स्वतंत्र। शिक्षित होकर नारियाँ दूसरी भाषाओं के साहित्य के संबंध स्थापित कर सकी और फिर उनकी बातों को ग्रहण किया।''[2] कहना आवश्यक नहीं कि शिक्षा प्रचार और प्रसार के कारण नारी विभिन्न बंधनों से मुक्त होने लगी है।

---

1. डॉ.श्यामबाला गोयल - भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ - 60
2. सं. नगेंद्रनाथ वसु - हिंदी विश्वकोश, भाग 23, पृष्ठ - 503

आधुनिक युग में नारी शिक्षा के कारण जागृत हुई है। परिणामस्वरूप नारी स्वच्छंद जीवन जीने लगी है। डॉ. मानचन्द खंडेला के मतानुसार - "नारी स्वतंत्र होने के स्थान पर पहले से अधिक घुटन व स्वयं को भ्रमित महसूस कर रही है। अधिक आधुनिक प्रगतिवादी व स्वतंत्र कही जानेवाली महिलाएँ सिगरेट व शराब पीने, नाईट क्लबों में जाने, अविवाहित रहने, जरा सी बात पर विवाह विच्छेदन कर लेने, बच्चों से परहेज करने, विवाहबाह्य यौन संबंधों की ओर प्रवृत्त होने, शरीर का खुला प्रदर्शन करने की मानसिकता से ग्रसित होती जा रही है।"[1] समग्र दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय नारी-जीवन में हुआ उत्थान - पतन का असर हिंदी उपन्यासों में स्पष्ट दिखाई देता है। परिवार तथा समाज में नारी को अनन्य साधारण महत्त्व है। सुरेंद्र वर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन का विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

3.1 समाज में नारी का स्थान :

भारतीय समाज में नारी अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सजग दिखाई देती है। भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज का आवश्यक अंग है परिवार और परिवार का आवश्यक अंग है नारी।

मानव जाति की सभ्यता एवं सामाजिक विकास का मूल स्रोत नारी है। नारी में सृजन, पालन और प्रलय की शक्तियाँ निहित हैं। शास्त्रों और पुराणों में नारी की अवस्था 'अवध्या' कही गई है - "भारतवासियों के सभी आदर्श स्त्री रूप में ही पाए जाते हैं। विद्या का आदर्श सरस्वती में, धन का लक्ष्मी में, पराक्रम का महामाया में अथवा दुर्गा में, सौंदर्य का रति में, पवित्रता का गंगा में, यहाँ तक कि भारतवासियों में सर्व शक्तिमान भगवान को भी जगत् जननी के रूप में देखा है।"[2] पुराण ग्रंथों में नारी को देवी के रूप में देखा जाता है। वास्तव में भारतीय समाज में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

आज नारी ने रुढ़ियों का विरोध एवं पारंपरिक नैतिक मूल्यों को चुनौती देना आरंभ किया है। सृष्टि के विकास क्रम में नर के समान नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण

---

1. डॉ. मानचंद खंडेला - महिला सशक्तिकरण, पृष्ठ - 14
2. चन्द्रावती लखनपाल - स्त्रियों की स्थिति, पृष्ठ - 18

रहा है। गर्भधारणा से लेकर संतान को जन्म देने तथा उस शिशु के सूझ-बूझ आने तक का लालन-पालन मुख्यत: स्त्री ही करती है। अत: मानव जीवन में नर-नारी का अनोन्याश्रित संबंध है।

3.2 परिवार में नारी का स्थान :

परिवार में नर-नारी के कार्यों एवं स्थितियों में भिन्नता है। पुरुषों को अर्थोपार्जन के लिए बाहर का क्षेत्र संभालना पड़ता है तो नारी घर की संचालिका होती है। सच देखा जाय तो परिवार प्रेम और प्रणय का ही विस्तारित रूप होता है। प्रेम को केंद्र में रखकर ही भारतीय परिवार में संयुक्त परिवार की परिकल्पना की गई है। डॉ. कुंतल कुमारी के मतानुसार - ''पारिवारिक परिवेश में नारी माँ, प्रेमिका, पत्नी, पुत्री, बहन तथा सेविका के रूप में, युग-युगांतर से नर की सहयोगिनी है। परंतु वस्तुस्थिति यह रही कि समाज में पुरुष ने उसे 'देवी' कहकर 'दासी' बनाया और फिर शास्त्रसंमत रूढ़िवादी मान्यताओं का प्रमाण देकर उसे कालांतर में अपने सभी अधिकारों से वंचित करके तथाकथित त्याग सेवा की प्रतिमूर्ति घोषित कर दिया।''[1] परिवार में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। आज भी नारी के लिए पारिवारिक संबंध मूलाधार है। डॉ. गणेश दास के शब्दों में - ''परिवार में नारी को आर्थिक दृष्टि से पराधीन रहना पड़ता है इसलिए परिवार की आंतरिक व्यवस्था का मूलाधार नारी ही बनती है।''[2] अत: स्पष्ट है कि परिवार में रहकर नारी को जीवन जीना पड़ता है। नारी मानव सृष्टि की अनुपम देन है। इसलिए परिवार में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3.3 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन :

नारी समाज जीवन का महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक घटक है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। सृष्टि के विकासक्रम में भी नर और नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है। उनके इस महत्त्वपूर्ण स्थान के कारण ही साहित्य में उनके विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है। सुरेंद्र वर्मा उन साहित्यकारों में अग्रेसर हैं जिन्होंने आधुनिक नारी का चित्र खिंचा है।

---

1. डॉ. कुंतल कुमारी - चंद्रकिरण सौनरेक्सा एवं शरत्चंद्र के नारी पात्र : एक तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ - 151
2. डॉ. गणेश दास - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप, पृष्ठ - 42

सुरेंद्र वर्मा जी ने अपनी सहज सरल शैली में 'नारी' की चिरपरिचित छवि और उसमें आए परिवर्तन की संभावनाओं का विस्तृत विवेचन अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है। वर्मा जी ने अपने साहित्य में औरत की परंपरागत छवि के परिवर्तन पर बल दिया है। उनके उपन्यास में नारी विद्रोह खुलकर सामने आया है। मीरा गौतम के शब्दों में - ''स्त्री विमर्श को एक अलग कोण से उठानेवाले लेखकों में सुरेंद्र वर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।''[1] वर्मा जी के उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् यह परिलक्षित होता है कि विवाह विषय नई चेतना, मानवीय संबंध, विवाह मूल्यों को न स्वीकारना, नारी-पुरुष संबंधों में उदारतावादी दृष्टिकोण जैसे भाव अधिकतर रचनाओं के केंद्र में है। पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करने पर भारतीय नारी स्वच्छंदी एवं उच्छृंखल बनी है। समग्र दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय नारी जीवन में हुआ उत्थान-पतन का असर वर्मा जी के उपन्यासों में दिखाई देता है। वर्मा जी ने नारी के अलिखित, अबूझे नारी जीवन के विविध रूपों को खोजा और उस पर विचार विमर्श भी किया है। उनके 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में नारी जीवन का चित्रण ज्यादा मात्रा में किया हुआ परिलक्षित होता है लेकिन 'अंधेरे से परे' और 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में नारी जीवन का चित्रण अत्यंत अल्प मात्रा में किया हुआ दृष्टिगोचर होता है। विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन का विवेचन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है -

3.3.1 कैरियरीष्ठ नारी -

आज की पढ़ी-लिखी नारी फिल्म, नाटक, मॉडेलिंग आदि में अपना कैरियर करना पसंद करती है। अपनी आंगिक और वाचिक कलाओं के माध्यम से प्रसिद्धि पा लेती है। अधिकतर नारियाँ फिल्म जगत में अपना कैरियर करना चाहती हैं जिसके लिए वह अपने घर-गृहस्थी को भी त्यागने को तैयार हो जाती है। इसका प्रमाण सुरेंद्र वर्मा का 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' की बिनी को मॉडेलिंग में विशेष दिलचस्पी है। वह उसी में कैरियर करना चाहती है। उसे टैक्सटाइल एसोसिएशन के फैशन शो

---

1. मीरा गौतम - अन्तिम दो दशकों का हिंदी साहित्य, पृष्ठ - 103

में काम करने के लिए ऑफर आती है। तब बिनी कहती है - ''कॉस्मैटिक्स या टैक्सटाइल के लिए मुझे एक बार मौका दीजिए और अगर मैं कसौटी पर खरी न उतरूँ तो आप बेशक बला से मुझे ...।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि आज की नारियाँ मॉडेलिंग में काम करने के लिए हमेशा के लिए तैयार हैं और वह संतोषजनक काम करके अपना कर्तृत्व सिद्ध कर रही हैं।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा वशिष्ठ नाटक तथा फिल्म जगत् में अपना कैरियर बनाना चाहती है। शाहजहाँपुर में पुराणपंथी ब्राह्मण परिवार में जन्मी वर्षा वशिष्ठ को अभिनय के प्रति बहुत लगाव होने के कारण वह दसवीं का फार्म भरते समय अपना नाम बदल लेती है। वर्षा अपने चाँद को पाने के लिए परिवार को छोड़कर नाटक में प्रवेश करती है। उसके मन में कुछ कर दिखाने की चाह जाग उठी। इसी क्षेत्र में उसे अपनी अतृप्त आकांक्षाएँ और इच्छाएँ पूरी होती हुई दिखाई देती है। डॉ. अर्चना गौतम के शब्दों में - ''पहले तो वह अपने अभावग्रस्त और त्रासदीपूर्ण जीवन से निकलने के लिए नाटक को अपना संबल बनाती है।''[2] अत: स्पष्ट है कि वर्षा के परिवारवाले पुराने विचारोंवाले और वर्षा आधुनिक विचारोंवाली होने के कारण दोनों में मतभेद दिखाई देता है। इसी कारण वर्षा परिवार को छोड़कर नाटक में प्रवेश करती है। बी.ए. के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने के बाद एक नाटक में अभिनय करती है। अपनी प्रबल इच्छा, मनोकामना पूरी करने के लिए घर-बार छोड़कर 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' तक जा पहुँचती है। आगे वह अपने आधुनिक नाम 'वर्षा वशिष्ठ' का प्रयोग जारी रखती है। अंग्रेजी की अध्यापिका मिस दिव्या कत्याल के संयोग और मार्गदर्शन से रंगमंच पर काम करने के लिए तैयार होती है। नाटक में काम करते समय वर्षा इतनी लगन और मेहनत से काम करती है कि उस नाटक के पात्र उसे अपने लगते हैं। डॉ. अर्चना गौतम के शब्दों में - ''वर्षा अभिनय की कला से भावात्मक स्तर पर इस कदर जुड़ जाती है कि नाटक के पात्र उसे अपने परिवार के सदस्य लगने लगते हैं।''[3] अत: स्पष्ट होता है कि मंच पर काम करते समय वह इतनी एकाग्र होती है कि उसे किसी तरह कि घबराहट महसूस नहीं होती। वह परिवार के

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 85
2. सं. प्रा.सु.मो. शाह - राष्ट्रवाणी, मई-जून, 1999, पृष्ठ - 14
3. वही, पृष्ठ - 15

रूढ़ि और परंपरा से बाहर निकलकर लखनऊ चली आती है। वहाँ उनकी मिट्ठू नामक कलाकार से भेंट हो जाती है। लखनऊ से लौटने के बाद माँ, पिता और भाई वर्षा की ओर संदेह की नजर से देखते हैं। माँ कहती है - ''जा के मर वहीं, जहाँ महीना भर काटा है ... बड़े, इसकी चुटिया पकड़ के ढकेल दे सड़क पर ... पाप कटे।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वर्षा का घर से बाहर निकलना उसके माँ को पसंद नहीं है। परिणामत: वर्षा घर की परिस्थिति से तंग आकर घर छोड़ने का निर्णय लेती है। कहना आवश्यक नहीं कि नारी का घर छोड़ना आज के समाज को मान्य नहीं जिसके कारण अनेक नारियों पर वर्षा जैसी घर से बाहर जाने की नौबत आती है। परिवार का मोह त्यागने पर वर्षा की और चाहते बढ़ने लगती हैं। दिल्ली जाने के बाद वर्षा हर्ष रूपी चाँद को पाना चाहती है। वर्षा दिल्ली के नाट्य विद्यालय में नाट्याभिनय के पाठ पढ़ाने के लिए दाखिल होती है। वहाँ 'बेवफा दिलरुबा' नाटक में वर्षा की भूमिका अटल जी को बहुत पसंद आती है। सूक्ष्म दृष्टि सेदेखा जाय तो इस उपन्यास में 'हंसिनी' की नीना, 'अपने अपने तर्क' की शान्या की भूमिका में वर्षा चरित्र के हर पहलू नजर आते हैं। नाटक में अपना रौब जमा पाने के बाद वह फिल्म अभिनेत्री बनने के लिए मुंबई चली जाती है। 'जलती जमीन' में उसकी भूमिका सभी को पसंद आती है, इतना ही नहीं उसका स्वागत लाल बगीचा बिछाकर किया जाता है। 'विषकन्या' नाटक के उपरांत वर्षा को 'नाट्य अकादमी का पुरस्कार' प्राप्त होता है। 'जलती धूप' पर 'राष्ट्रीय पुरस्कार' मिलता है।

वर्षा इस प्रमुख पात्र के बाद रंजना, चारुश्री और कंचनप्रभा फिल्म अभिनेत्री के रूप में कैरियर करना चाहती है। 'रंजना' पैंतीस साल की परित्यक्ता नारी है। वह डान्स डायरेक्टर है। फिल्म में काम करती है। यह बात उसके पति को अच्छी नहीं लगती। इसी कारण वह उसे छोड़कर चला जाता है। 'चारुश्री' डान्सर, अभिनेत्री है। फिल्म 'कंपन' में हर्ष और चारुश्री एक साथ काम करते हैं। कंचनप्रभा के मन में वर्षा के प्रति ईर्ष्या भाव पैदा होता है। कंचनप्रभा अभिनय के क्षेत्र में सफलता हासिल करने के लिए शरीर प्रदर्शन का रूख अपनाती है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि आज की युवतियों की कैरियर करने में अधिक रुचि होने के कारण वे ध्येयवादी बन गई हैं।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 74

3.3.2 विवाहपूर्व मातृत्व की चाहत रखनेवाली नारी –

आज की नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनने के कारण वह आत्मसम्मान से जीना चाहती है। गर्भपात करना उसे पसंद नहीं है। वह परिवार, समाज की मान-मर्यादा को तोड़कर अपना वैयक्तिक जीवन सम्मान के साथ जीना चाहती है। वह संतान के प्रति संवेदनशील होने के कारण कुमारी रहकर भी संतान का पालन-पोषण करना चाहती है।

सुरेंद्र वर्मा जी ने 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा वशिष्ठ के द्वारा स्त्री में मातृत्व की चाह कितनी प्रबल होती है इसे स्पष्ट किया है। वर्षा शहाजहाँपुर की अभावग्रस्त और कट्टर पुराणपंथी ब्राह्मण परिवार में जन्मी है। परिवार के सभी सदस्य अभिनय के क्षेत्र में कैरियर करने से उसे रोकते हैं, लेकिन वर्षा को हर्षरूपी चाँद पाने की लालसा ने घर-परिवार का त्याग करने का फैसला महत्त्वपूर्ण लगता है। इसलिए वर्षा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते-करते दिल्ली पहुँचती है। वहाँ उसे हर्षरूपी चाँद मिलता है। दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित होकर इतने करीब आते हैं कि दोनों में यौन-संबंध स्थापित हो जाते हैं। उसे हर्ष के साथ यौन-संबंध रखने में खुशी होती है। जब वर्षा को पता चलता है कि वह गर्भवती है तब उसे अफसोस नहीं होता बल्कि उसे खुशी होती है। हर्ष को अभिनय क्षेत्र में असफलता प्राप्त होती है। इसी कारणवश वह ड्रग्ज का ओवरडोज लेकर आत्महत्या करता है। इसी वक्त वर्षा नीरजा से कहती है – ''मैं हर्ष के बच्चे का स्वीकार करूँगी।''[1] अत: स्पष्ट है कि वर्षा हर्ष के बच्चे का स्वीकार करना चाहती है। हर्ष की माँ और बहन उस बच्चे का स्वीकार करने में इन्कार करते हैं लेकिन वर्षा अपने बच्चे की परवरिश में किसी की मदद नहीं लेना चाहती है। वह घरवालों से कहती है कि, ''आपसे मदद माँगी किसने है? मैं जैसी दीन-हीन पैदा हुई थी, मेरा बच्चा वैसे पैदा नहीं होगा। वह अपनी माँ के घर में मुँह में चाँदी के चम्मच के साथ पैदा होगा, जैसा उसका बाप हुआ था।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि, उसके पेट का बीज केवल हर्ष की स्मृति नहीं था बल्कि उसका अपना भी अंश था। वह विवाहपूर्व माता बन जाती है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 553
2. वही, पृष्ठ – 555-556

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की किरण कुँवारी माता बनती है लेकिन वह इस बात का कोई अफसोस नहीं करती। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने विवाहपूर्व मातृत्व की चाहत रखनेवाली नारी का चित्रण पर्याप्त मात्रा में किया हुआ दृष्टिगोचर होता है।

3.3.3 विद्रोही नारी –

आज की नारी पढ़ी-लिखी होने के कारण उसे अपनी अस्मिता की पहचान हो गयी है। नेमिचन्द्र जैन के शब्दों में – "विशेषकर व्यक्तिगत स्वाधीनता और व्यक्तित्व की अद्‌वितीयता जैसी अवधारणाओं का विस्तार अब हमारे देश में केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं रह गया। उचित ही स्त्री भी अपने व्यक्तित्व और उसकी रक्षा तथा प्रतिष्ठा के प्रति सजग होती जा रही है।"[1] परिणामत: आज की नारी अपने पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार के प्रति सजग दिखाई देती है।

'अंधेरे से परे' उपन्यास में चेतित नारी के रूप में बिंदो नजर आती है। जित्तन असिस्टंट मैनेजरी की नौकरी करते वक्त पैसे लेने के जुर्म में सस्पेंड हो जाता है। जित्तन दूसरी जगह नौकरी करे ऐसा बिंदो को बार-बार लगता है। बिंदो अपनी सहेली लतिका से जित्तन की नौकरी की बात करती है। स्टेनलैस स्टील के बर्तनों का ऑर्डर लेना उसे पसंद नहीं है। दोनों में हर रोज झगड़ा होता है। जित्तन गुस्सा होकर अपने मित्र मुकुंद के घर जाता है। हर-रोज की चिक-चिक से तंग आकर बिंदो 'एक्सपोर्ट सेक्शन' में नौकरी करती है। बिंदो हर श्याम एक युवक के साथ बाहर निकलती है। बिंदो को जित्तन क्या सोचेगा या घरवाले क्या कहेंगे इसकी जरा सी भी फिक्र नहीं करती है। एक बार जित्तन पूछता है – वह कौन था? तो वह बेझिझक कहती है – "मेरा सबसे नजदीकी दोस्त।"[2] अत: स्पष्ट होता है कि किसे क्या करना है और क्या नहीं यह हर एक व्यक्ति का अपना निजी मामला है। जित्तन को बहुत गुस्सा आता है। बिंदो कहती है कि, "चिखो मत। मुझे ऊँची आवाज की आदत

---

1. नेमिचंद्र जैन – अधूरे साक्षात्कार, पृष्ठ – 144
2. सुरेंद्र वर्मा – अंधेरे से परे, पृष्ठ – 147

नहीं है। बिंदो का स्वर समतल था पर तीखा। ध्वनियों को महसूस करो, तो दांतो के पैनेपन का अहसास हो।''[1] बिंदो के इस कथन से स्पष्ट होता है कि ऊँची आवाज में बाते सिर्फ पुरुष ही नहीं कर सकता बल्कि नारी भी ऊँची आवाज में बोल सकती है। जित्तन को बिंदो का इस तरह का बर्ताव पसंद नहीं है। जित्तन अपने पर सय्यम नहीं रख सकता हैं। जित्तन तथा बिंदो के वक्तव्य से उनके संबंधों पर यहाँ प्रकाश डाला जा सकता है - '' 'तुम हद से आगे बढ़ रही हो।'... 'मैं जो ठीक समझूँगी, वो करुँगी'... 'मैंने तुम्हें बर्दाश्त किया है, ... बिंदो' बर्दाश्त तुमने मुझे किया है या मैंने तुम्हें ?''[2] इस तरह दोनों में सवाल जबाव होते हैं। बिंदो में चेतना जागृत् हो जाती है उसे अपने अस्मिता की पहचान होती है। हर-एक पत्नी को लगता है कि अपना पति कुछ कामाकर घर लाये लेकिन जित्तन कुछ न करते हुए घर पर ही रहता है। बिंदो का कहना है कि अगर हमारे पास गहरा मनोबल, संकल्पशक्ति हो तो दुनिया कि किसी भी चीज को पा सकते हैं। इस कथन से स्पष्ट होता है समाज में अपना अस्तित्व निर्माण करने के लिए जित्तन का इस तरह घर बैठना अच्छा नहीं लगता है। बिंदो पढ़ी-लिखी होने के कारण चार दीवारी से बाहर निकलकर नौकरी करती है।

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा के माध्यम से नारी के चेतना-जागृति को उभारा है। वर्षा का जन्म ब्राह्मण परिवार में होने के कारण वर्षा का जो कुछ करना पिताजी के सोच के परे की बात थी। वर्षा के पिताजी प्राइमरी स्कूल में मास्टर है। वर्षा पिताजी को न पूछते हुए अपना नाम बदलती है। पिताजी के पूछने पर वह कहती है - ''अब हर तीसरे-चौथे के नाम में शर्मा लगा होता है मेरे क्लास में सात शर्मा है ...। यशोदा? घिसा-पिटा दकियानूसी नाम।''[3] यहाँ स्पष्ट होता है कि अपनी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए वर्षा यह पहला कदम उठाती है। दिव्या कत्याल से प्रेरणा पाकर वह कॉलेज के मंच पर उतरती है। परिवार वालों से आता नकार देखकर वह घर छोड़कर दिल्ली, बम्बई चली जाती है। वहाँ अनेक व्यक्तियों के साथ उसका प्रेम हो जाता है और सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री भी बन जाती है। वह कहती है - ''न मेरे हाथों में लगाम है, न मेरे पाँवों में रकाब, और उम्र का घोड़ा तेज तेज दौड़े

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 147
2. वही
3. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 16-17

रहा है।''[1] अत: स्पष्ट है वर्षा जिस पायदान पर खड़ी है वहाँ से पीछे आना अब मुश्किल है।

वर्षा के पिताजी वर्षा की शादी ऐसे आदमी से करना चाहते हैं जिसे एक बच्चा भी है। वर्षा कहती है - ''मेरा बस चले, तो मैं आकाश दहलीज पर बनी सात रंगों की इन्द्रधनुषी अल्पना बनूँ, पर जो अपने प्रदेश के अनुरूप।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वर्षा के सपने तो तैयार है। इसके बारे में पिताजी को अच्छा लगे या बूरा लगे, इससे उसे कोई मतलब नहीं परिवार की नाक कट जाए तो भी कोई हर्ज नहीं वर्षा का भाई महादेव वर्षा को नाटक में काम करने से इन्कार कर देता है। बहन गायत्री शादी से उत्पन्न आनंद का महत्त्व बताती है। वर्षा विवाह जैसे बंधन में बँधना पसंद नहीं करती बल्कि उसकी दृष्टि से कैरियर महत्त्वपूर्ण है। वह इस संदर्भ में कहती है वंश में किसी लड़की ने नौकरी नहीं की। वह आगे भी न करे यह जरुरी नहीं है। ''मैं ब्याह नहीं करुँगी, तुम लोग चाहे मारो, चाहे कटो।''[3] अत: स्पष्ट है कि वर्षा विवाह से अधिक कैरियर को महत्त्व देकर नारी-अस्मिता की पहचान दिखाती है।

प्रस्तुत उपन्यास की दिव्या कत्याल, अनुपमा, चारुश्री, कंचनप्रभा, जैनेट आदि नारियाँ नारी मुक्ति, चेतना जागृति, अन्याय के विरूद्ध न्याय की माँग और अस्तित्व बोध के साथ अपना कैरियर करना चाहती है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में वर्मा जी ने नारियों में एक नयी चेतना निर्माण की है। इस उपन्यास की अधिकतर नारियाँ अपनी यौन तृप्ति, इच्छा तथा माँगे पूरी न होने के कारण यौन क्षुधा को शांत करती है। नील ओव्हर टाईम कर उनकी माँगों की पूर्ति करता है। यह सभी नारियाँ उच्चवर्गीय, धनाढ्य, पूँजीपति हैं। ब्लॉसम अपने पिता का स्वर्गवास होने पर भी यौन तृप्ति करवाती है। पति से अतृप्त नारी पारुल तथा अधेड़ उम्र की अतृप्त नारी यास्मीन आदि नारियाँ नील को दुगुना पैसा देकर अपने यौन की तृप्ति करवाती है। यास्मीन ब्लॉसम का आभार इसलिए मानती है कि उसने नील का नाम बताया। यास्मीन यौन-तृप्ति के बदले नील को एक हजार

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 185
2. वही, पृष्ठ - 20
3. वही, पृष्ठ - 77

रुपये देती है। तब वह नील से कहती है - "हजार है, उसकी ओर देखे बिना कहा और एक पल ठिठककर नोट उसकी कमीज की जेब में रख देती है।"[1] अत: स्पष्ट है कि यास्मीन नील से यौन तृप्ति करती है। उसी तरह पारुल भी नील से अपनी यौन तृप्ति करवाती है और नील से गर्भवती भी बन जाती है। नील से रहे गर्भ को न गिराकर वह अवैध मातृत्व का स्वीकार कर लेती है और नए समाज का निर्माण भी करती है। पारुल की शादी जयंत के साथ होती है। उसे एक बेटी भी है लेकिन नील नैन से शादी करना चाहता है। यह बात पारुल सह नहीं पाती। पारुल का भाई नवीन नील को मारने के लिए मूर्तजा को सुपारी देता है और नील की रेल की पटरी के नीचे धकेलकर मृत्यु होती है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने आधुनिक नारी जीवन की माँग की है। नारी अस्मिता को बनाए रखते हुए नारी जागरण का काम भी उन्होंने किया है। आज स्त्रियों में अपने प्रति होनेवाले अत्याचारों एवं समान अधिकार प्राप्त करने को लेकर काफी जागरुकता एवं संघर्षशीलता पैदा हो रही है।

3.3.4 नौकरी पेशा नारी :

आज नारी शिक्षित ही नहीं बल्कि उच्चशिक्षित भी हुई है। भूमंडलीकरण के माहौल में ऐसा एक क्षेत्र भी नहीं रह गया है कि जहाँ नारी का पदार्पण न हुआँ हो। जहाँ नारियों ने स्वंय को शिक्षा क्षेत्र में अग्रसर रखा है, वहाँ स्वंय को नौकरी के क्षेत्र में भी पीछे नहीं रखा।

'अंधेरे से परे' की बिंदो के पति की नौकरी चली जाने के कारण वह अपने परिवार के साथ ससुराल में जाकर रहते हैं। एक साल में ही बचे-बचाये सभी पैसे खत्म होते हैं। बिंदो को सोमू नामक लड़का है। उसकी पढ़ाई का खर्च और घर की जिम्मेदारी के कारण बिंदो 'एक्सपोर्ट सेक्शन' में नौकरी करने का फैसला करती है। 'आकाशदीप' एडवर्टायजिंग कंपनी में मधु और नलिनी जैसी नारियाँ भी नौकरी करती है। चित्रा भी नौकरी पेशा नारी है। वह अपने पति रोहित के साथ बिजनेस में हाथ बटाती है। प्रस्तुत उपन्यास की ज्यादातर नारियाँ नौकरीपेशा है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुल्दस्ता, पृष्ठ - 85

'मुझे चाँद चाहिए' में वर्षा, दिव्या, शिवानी, सतवंती, चन्द्रिका ये नौकरीपेशा नारियाँ है। मिस दिव्या कत्याल अंग्रेजी की अध्यापिका है वह छात्रावास की वॉर्डन भी है। दिव्या मिश्रीलाल डिग्री कॉलेज की अकेली प्राध्यापिका है जो सिखाते समय हाथों में नोट्स नहीं लेती हैं। दिव्या कत्याल 'संस्थापक दिवस' के अवसर पर 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का मंचन कर कॉलेज के इतिहास में अपना नाम रोशन करती है। दिव्या कॉलेज में वर्षा का निबंध पढ़कर इतनी प्रभावित होती है कि उसकी गाईड भी उसकी मित्र बन जाती है। वर्षा के घरवाले वर्षा को नाटक में काम नहीं करने देते हैं। वर्षा की नाटक के प्रति रुचि देखकर दिव्या वर्षा के घर जाकर पिताजी को समझाते हुए कहती हैं - "सबसे पहले मैं आपसे माफी माँगती हूँ कि ... मैं आपके सामने अपना दृष्टिकोण रख सकूँ। हम नाटक को एक सांस्कृतिक तथा सौंदर्य बोधीय कार्यकलाप के रूप में लेते हैं। इस प्रक्रिया में कोई ऐसा कारण नहीं, जिससे वर्षा की सामाजिक बदनामी का डर हो।"[1] इस कथन से स्पष्ट होता है वर्षा के पिताजी की परंपरागत दृष्टि को दूर करने के लिए दिव्या उन्हें समझाती है। दिव्या प्रशांत नामक युवक से प्रेम करती है लेकिन प्रशांत सुहासिनी संन्याल से विवाह करता है। दिव्या सभी को छोड़कर लखनऊ चली जाती है।

सतवंती तलाक पीड़ित नारी है। वह सूर्यभान की सहायता से टेन्सिल टाइपिंग में काम करती है। शिवानी ऑफिस में काम करती है। शिवानी किसी के अहं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती। वर्षा एक रिपर्टरी कंपनी में काम करती है। चन्द्रिका संस्कृत की प्राध्यापिका है। वह भाई-बहनों में बड़ी होने के कारण बाँके बिहारी का पालन-पोषण करती है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने नौकरीपेशा नारी को पर्याप्त रूप में चित्रित किया हैं।

3.3.5 स्वच्छंदी नारी :

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से प्रभावित युवतियाँ प्रेम कर यौन-संबंध स्थापित करती है। प्रेम और यौन-संबंधों के खातिर ये औरतें धर्म-जाति, नीति-

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 33-34

अनीति, श्लील-अश्लील किसी भी बात की परवाह नहीं करती है। डॉ. देवेंद्रनाथ वर्मा के मतानुसार ''आधुनिक समाज में नारी-पुरुष संबंधों का एक स्तर हुआ है, जहाँ संयोग के शारीरिक सुख की तृप्ति के लिए सामाजिक बंधनों को चुनौती दी जाती है।''[1] परिणामत: विवाहपूर्व और विवाहबाह्य यौन संबंधों को बढ़ावा मिलने लगा है।

सुरेंद्र वर्मा के 'अंधेरे से परे' उपन्यास की बिंदो अवैध यौन-संबंध रखती है। साथ ही मधु भी यौन क्षुधा को तृप्त करने के लिए परपुरुष से संबंध रखती है। मधु गुलशन में इतनी समा जाती है कि उसकी खुली बाँहे देखकर उसे रहा नहीं जाता उसके यौन-संबंध को इस तरह चित्रित किया है - ''एक हाथ उसकी खुली कमर पर, दूसरा गर्दन के पीछे। दबाव से उसका तनिक पीछे को झुक-सा जाना।... नीचे उतरना ... होठों का दूसरा जोड़ा... छोटे-छोटे मंद चुंबन... गर्दन से हटकर दूसरे हाथ का पीठ पर आ जाना।''[2] अत: स्पष्ट है इस तरह मधु गुलशन से यौन संबंध रखती है। मधु राजकोट को पति की कजिन की शादी के लिए जाती है। मधु का रोहित के साथ चलना फिरना गुलशन को अच्छा नहीं लगता। गुलशन मधु से कहता है - '' 'अपने संबंधो को लेकर हमें अब कुछ फैसला कर लेना चाहिए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं बिल्कुल निश्चिंत हूँ कि तुम्हारे बिना अब ...''[3] इस कथन से स्पष्ट होता है कि गुल्लू मधु के बिना एक पल भी नहीं रह सकता। पति किसी काम से बाहर जाता हैं तो उस वक्त गुल्लू उसके साथ रहता है।

बिंदो सज-धजकर रिसीवर नीचे रखते हुए मि. चड्ढा से मिलने बाहर जाती है। जित्तन की समझ में नहीं आ रहा था कि बिंदो कहाँ जा रही है। वह बिंदो की तरफ देखता ही रह जाता है। ममा बिंदो को पूछती है जित्तन को इस बात का पता चले तो तब बिंदो कहती है - '' 'मैं कुछ नहीं कर सकती है। मैं विवश हूँ।' 'मैं अपनी भावनाओं का कुछ नहीं कर सकती।' माँ पूछती हैं ? 'जित्तन को पता है' 'अभी नहीं' 'कभी तो चलेगा।' जित्तन इसे किस तरह से लेगे ?' 'किसी भी तरह से ले, मुझे क्या है।''[4] अत: स्पष्ट होता है कि बिंदो स्वच्छंदी जीवन जीना चाहती है।

---

1. देवेंद्रनाथ वर्मा - कहानी की संवेदनशीलता, सिद्धांत और प्रयोग, पृष्ठ - 20
2. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 95
3. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 144
4. वही, पृष्ठ - 102

जिस बार में नलिनी, गुल्लू राजवंश थे उसी बार में एक युवक के साथ बिंदो नाच-गाना कर रही थी। वह दोनों जलती-बुझती रोशनी में नृत्यलीन थे। बिंदो की दोनों बाँहे युवक की गर्दन पर थी और युवक उसके कपोल पर होंठ रख देता है। धुन समाप्त होने पर वे दोनों एक मेज की ओर बढ़ जाते हैं। बिंदो किसी को इसका पता न चले इसीलिए ''बैड़पर छोटी-सी गुड़िया के मोटिफ वाला। पैंताने हाऊसकोट रखा था। सिरहाने बैडकवर का कोना उलट गया था, जिससे सफेद चादर और सेमल वाले तकियों का एक कोना दिखाई रहा था।''[1] अत: स्पष्ट है कि बिंदो शादी-शुदा और एक बच्चे की माँ होकर चोरी चुपके अवैध यौन संबंध रखती है। गुल्लू और नलिनी एडवर्टायजिंग में नौकरी करते हैं। वहाँ वे दोनों एक-दूसरें के प्रति आकर्षित होते हैं। नलिनी रोहतक रोड पर अपना कुँवारापन तोड़ देती है। अत: स्पष्ट है कि इन सभी नारियों पर पाश्चात्य यौन-संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।

'मुझे चाँद चाहिए' में उपन्यास की नायिका वर्षा के स्वच्छंदी यौन संबंध का चित्रण मिलता है। वर्षा के पिताजी ब्राह्मण होने कारण उन्हें अपनी बेटी वर्षा का परंपरा के विरूद्ध बर्ताव अच्छा नहीं लगता। वर्षा दिव्या कत्याल के माध्यम से नाटक और फिल्म में अभिनय करने के लिए घर से बाहर निकलती है। उसकी पहली मुलाकात कमलेश नामक युवक से होती है। वर्षा का कमलेश के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है।

वर्षा का दूसरा प्रेमी लखनऊ का मिट्ठू है। मिट्ठू के साथ वह घुमने जाती है। मिट्ठू वर्षा को बगीचा में ले जाकर एकांत में चूमता है। उसके साथ प्रणय प्रसंग करने में पीछे नहीं हठती। सुरेंद्र वर्मा के शब्दों में - ''वर्षा की रीढ़ में एक हल्की-सी झुरझुरी हुई। मिट्ठू ने उसके होठों पर तप्त दबाव बढ़ाया ... यौंनावेग के अनेक स्पंदन अचानक उसकी देह में चमक उठे।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वर्शा स्वच्छन्द यौन संबंध रखती है। चतुर्भुज धनसोखिया के निर्देशन में 'अपने-अपने नरक' में वर्षा और हर्षवर्धन एक-साथ काम करते हैं। हर्षवर्धन वर्षा के देह-

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 112
2. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 70

मन में समा जाता है। हर्ष के साथ प्रेमानुभव के एक-एक क्षण का अनुभव वह करती है। जैसे - ''हर्ष ने मुस्कान के साथ उसे देखा फिर व्यग्र चुंबन से उसकी हँसी को दबा दिया। हँसी कुछ क्षण फड़कती रही - जैसे कपोत की गर्दन पर नस। फिर शांत हो गई, सुख से विभोर।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि वर्षा की हर्ष के साथ गहरी निकटता है। वह उसे अपना 'पुरुष' मानने लगती है। हर्ष प्रजासत्ताक दिन के अवसर पर उसका कौमर्य भंग करता है। वर्षा का चौथा प्रेमी कैमरामैन सिद्धार्थ है। सभी प्रकार के अनुभव साथ लेकर वह सिद्धार्थ की बाँहों में चिपक जाती है। पत्रिकाओं में सिद्धार्थ और वर्षा के बारे में उलटा-सीधा छपकर आता है। तब वर्षा के बारे में जुहू की पडोसन कहती है - ''जहाँ वर्षा अपने फ्लैट में शिफ्ट करने के पहले रहती थी; आधी-आधी रात को सिद्धार्थ को आते-जाते देखा गया है।''[2] इस तरह से सिद्धार्थ और वर्षा के संबंध बढ़ जाते हैं। संवाददाता मेहरू मर्चंट वर्षा को अनेक सवाल पूछता है। वर्षा शिवानी और अनुपमा के साथ लेस्बियन संबंध भी रखती है। इस तरह वर्मा जी वर्षा के माध्यम से फिल्म क्षेत्र में कैरियर करनेवाली अभिनेत्री तथा अनेक युवकों से स्वच्छंद यौन संबंध रखनेवाली नारी के रूप में चित्रित किया है।

लेखक सुरेंद्र वर्मा जी ने 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में स्वच्छंद यौन संबंध रखनेवाली नारी को चित्रित किया है। इस उपन्यास की धनाढ्य, पूँजीपति औरते नील जैसे युवक को पैसे देकर अपनी यौन-तृप्ति करवाती है। अधिकतर नारियाँ विवाहित होकर भी यौन-संबंध रखती है। शशिप्रभा शास्त्री अपनी 'गंध' इस कहानी में खिलती है - ''कितनी बार सोच चुकी है स्त्रियों के लिए चकले या पुरुष वेश्यालय क्यों नहीं हुए, जहाँ वे भी स्वतंत्रता से जा सकती ? पुरुष और स्त्री की नैतिकता के मानदंडो में अंतर क्यों ? क्या स्त्री के मन नहीं है ? उसका अख्य नहीं है?''[3] यास्मीन, शिल्पा, पारुल, करुणा, अड़तीस वर्षीय प्रौढ़ कुमारी कुमुद अधिक पैसे देनेवाली वैशाली तथा नील आदि कई औरतें अपनी यौन तृप्ति के लिए चाहे कितना भी पैसा खर्च करने के लिए तैयार है। वर्मा जी ने 'पुरुष वेश्या' की नयी संकल्पना को साकार किया है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने स्वच्छंदी तथा उन्मुक्त यौन संबंध रखनेवाली नारियों का चित्रण पर्याप्त मात्रा में किया है।

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 147
2. वही, पृष्ठ - 269
3. शशिप्रभा शास्त्री - दो कहानियों के बीच (गंध), पृष्ठ - 67

3.3.6 संघर्षशील नारी :

संघर्ष जिंदगी की अनिवार्य शर्त है और अपने अस्तित्व की सुरक्षा तथा पहचान का एक मात्र औजार भी। हर व्यक्ति शुरु से लेकर अंत तक संघर्ष करता हुआ नजर आता है।

'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में वर्षा के माध्यम से स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है। वर्षा के भाई महादेव और वर्षा दोनों के बीच तनाव निर्माण होते हैं। वर्षा को उसका बड़ा भाई महादेव उसे नाट्यभिनय करने के लिए रोकता है। महादेव अपनी बहन वर्षा की शादी करना चाहता है लेकिन वर्षा उसे कहती है – ''आयु के जिस मोड़ पर मैं खड़ी हूँ, उसमें शादी मुझे उतने महत्त्व की नहीं लगती, जितना अपने पाँवों पर खड़ा होना लगता है।''[1] अत: स्पष्ट है कि वर्षा विवाह बन्धन में न अटकर अपना कैरियर बनाना चाहती है। परिवारवालों से तंग आकर धतूरे के बीज खाकर संसार को त्यागने का निर्णय लेती है। वर्षा अपने घर से ही संघर्ष की शुरुआत करती है। पारंपरिकता से तंग आकर वह जो करना चाहती है वह कर दिखाती है। वर्षा के इस चिन्तन, बौद्धिकता और तार्किकता से परिवारवाले सराहते नहीं। डॉ. शशिकला त्रिपाठी के शब्दों में ''पिता और बड़े भाई ही नहीं, माँ और बड़ी बहन भी उसके आचार-विचार के कैंची लगाना चाहते हैं।''[2] इस कथन से स्पष्ट होता है कि स्त्री के संघर्ष की शुरुआत पहले परिवार से होती है और फिर समाज से। दिव्या कत्याल वर्षा को पत्र लिखकर दिल्ली बुला लेती है लेकिन पिताजी जाने की इजाजत नहीं देते हैं। पिताजी उसे पीटने के लिए उतारु हो जाते हैं। माँ भर्त्सना करते हुए कहती है – ''देखो कुलच्छिनी को ... अब बुढ़ापे में मुझे कुजात के हाथ का खाना ठुसायेगी ... अरे नासपीटी, भले है तेरे बाप... कोई और होता तो दुरमुट से कूट के रख देता... नहीं तो पैदा होते ही टेंटुवा दबवा देती।''[3] यहाँ माँ नाटक में काम करने से इन्कार करती है। तब दोनों में संघर्ष शुरु होता है। अभिनय में काम करने के लिए वह सारे बंधन को तोड़ देती है। लखनऊ से वापस घर आने पर माँ उसे कोसती है – ''जा के मर वहीं, जहाँ महीना भर काटा है ... बड़े इसकी चुटिया पकड़ के ढकेल दो

---

1. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 48
2. डॉ. शशिकला त्रिपाठी – उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री, पृष्ठ – 55
3. सुरेंद्र वर्मा – मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ – 65

सड़क पर ... पाप कटे।''[1] अत: स्पष्ट होता है कि माँ को वर्षा का बाहर जाना पसंद नहीं था। अर्थात् आज भी नारी को दहलिज लाँघना मना है। महादेव भाई की पत्नी वर्षा को 'नौटंकी बाज' कहकर पुकारती है। महादेव की पत्नी मोहिनी भी बहुत सताती है सूखा कपड़ा छत पर फेंकती है। उसके किताबों को तितर-बितर कर देती है। इतना ही नहीं वह रोटी जलाकर देती है। माँ-बाप के साथ भाभी भी इस तरह का बर्ताव करने लगती है। इतनी त्रासद स्थितियों से सँभालकर वर्षा अभिनेत्री बनती है। पिताजी तहसीलदार के साथ वर्षा का ब्याह करवाना चाहते हैं। परंपरावादी विचारों के पिताजी और आधुनिक विचारोंवाली वर्षा पिताजी की बात को नहीं मानती। वह कहती है - ''वंश में नहीं हुआ, वह आगे भी न हो, यह जरुरी नहीं है। मैं ब्याह नहीं करुँगी, तुम लोग चाहे मारो, चाहे कूटो।''[2] अत: स्पष्ट है कि पुराने विचारों और नये विचारों में टकराहट दिखाई देती है।

दिल्ली निकली वर्षा को बड़े भाई महादेव द्वारा बाथरूम में बन्द करके पिटा जाता है। उसे बहुत देर तक बन्द करके भी रखता है। वर्षा तितर-बितर होकर सारा सामान फेंक देती है। डॉ. सिंहल द्वारा उसे बाथरूम से निकाला दिया जाता है। महादेव को कानून का डर दिखाया जाता है। अंत में पिताजी को अपने किये का एहसास होता है। सतवंती और उसके पति के बीच संघर्ष दिखाई देता हैं। यह संघर्ष कुमारी कौशल्या के कारण शुरु होता है। सतवंती वर्षा से कहती है - ''मेरा घर चमचम चमकता था।... 'जुल्म की हद' जब पति ने 'सौतन को छाती पर ला बिठाया।''[3] यहाँ पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का अपना संघर्ष का मूल कारण होता है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि वर्षा का यह संघर्ष आधुनिकता की तहत ठीक लगता है।

3.3.7 विवाह बंधन से मुक्त नारी :

भारत वर्ष में विवाह को पवित्र धार्मिक संस्कार माना जाता है। आज नगरों-महानगरों में विवाह को निरर्थक बंधन मानकर उसे आज की युवा पीढ़ी झुठला रही है। कुछ विवाहित नारियाँ भी वैवाहिक जीवन से ऊबकर विवाह संस्था को

---

1. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 74
2. वही, पृष्ठ - 77
3. वही, पृष्ठ - 223

अमान्य कर रही है। "नारी के लिए मुक्ति का मार्ग संघर्ष से जूझना है, खोखली मर्यादाओं से टकराना है, निरर्थक, नारी-जीवन में सार्थक नारी जीवन की तलाश करनी है।"[1] अत: स्पष्ट है कि आज की नारी संघर्षरत रहकर समाज में अपना स्थान निर्माण कर रही है।

'अंधेरे से परे' की बिंदो विवाह बंधन से मुक्ति पाना चाहती है। जित्तन की नौकरी चली जाने से पति-पत्नी में रोज अनबन होती है। जित्तन घर में किसी प्रकार की मदद नहीं करता। दोनों का झगड़ा होने पर जित्तन अपने मित्र मुकुंद के घर जाता है। गुल्लूउसे समझा-बुझाकर घर ले आता है। तब बिंदो कहती - "तो तुम सही-सलामत हो ? बिंदो ने आरोप के स्वर में पूछा।"[2] अत: स्पष्ट है जित्तन का घर आना भी बिंदो को पसंद नहीं है। बिंदो पति के साथ अन्य रिश्तों के झंझट से मुक्ति पाना चाहती है। नौकरी के नाम पर फिल्म देखने जाना, बार में जाना, रात बहुत देर से आना, डॉ. चड्ढ़ा के साथ यौन संबंध रखना, बच्चे के प्रति अनादर, पति के साथ बार-बार झगड़ा करना आदि घटनाओं से वह छूटकारा पाना चाहती है। बिंदो सिल्क, काठ के बटन वाला कोठ पहनकर रात के वक्त बाहर जाती है। तब गल्लू को सोमू और जित्तन का अकेलापन अच्छा नहीं लगता है। गुल्लू बाहर से घर आता है तब बिंदो गेट पर सज-धजकर खड़ी दिखायी देती है। बिंदो सोमू की देखभाल करने के लिए कहती है। तब बिंदो गुल्लू को कहती है - "मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरे बस में कुछ नहीं रहा।... पर अब मैं बिल्कुल विवश हूँ।"[3] अत: स्पष्ट है कि बिंदो पति के साथ नहीं रहना चाहती है।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा नाटक और फिल्म को अपना सब कुछ मानती है लेकिन घरवाले उसे इस क्षेत्र में काम करने के लिए इन्कार कर देते हैं। पिताजी वर्षा की शादी करना चाहते है लेकिन उसके जवाब में वह कहती है - "मैं शादी नहीं करुँगी।"[4] इससे अत: स्पष्ट है वर्षा शादी नहीं करना चाहती। अत: स्पष्ट है कि वर्षा विवाह के बंधन में युवक से उसकी पहचान होती है। हर्ष नामक युवक की

---

1. सं.डॉ.गोपाल राय - समीक्षा, जुलाई-सितंबर, 1997, पृष्ठ - 11-12
2. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 20
3. वही, पृष्ठ - 132
4. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 77

ओर पूरी तरह आकर्षित हो जाती है। वर्षा उसके साथ विवाहपूर्व यौन-संबंध रखती हैं और शादी के बगैरे गर्भवती बन जाती है। वर्षा अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को जन्म देना चाहती है। हर्ष फिल्म हिट न होने के कारण वर्सोवा बीच पर नशैली दवाओं का सेवन कर आत्महत्या करता है। हर्ष की बहन और माँ भी शादी करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं लेकिन वर्षा विवाह के जंजाल में फँसना नहीं चाहती है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की अधिकतर नारियाँ विवाह बंधन को नहीं मानती उनकी यौन-तृप्ति न होने के कारण नील जैसे युवक को पैसों का लालच दिखाकर यौन-तुष्टि करवाती है। यास्मीन नील को अपने साथ रातभर रुकने के लिए कहती है - ''ओवरटाइम स्टे के चार्जेज दुगने होते हैं, हमें मालूम है।''[1] अत: स्पष्ट है कि यास्मीन नील को ओवरटाइम देकर रात में अपने पास रखना चाहती है। यास्मीन पति की तोंद बढ़ने के कारण तलाक देती है और नील से संपर्क रखती है। पति की नपुंसकता के कारण उसे ठुकरा देती है। निष्कर्षत: स्पष्ट होता है कि आज नील जैसे युवक के कारण नारी विवाह को विवाह के बंधन में बंधना आवश्यक नहीं समझती।

3.3.8 आधुनिक नारी :

वर्तमान काल में समाज के अधिकतर लोगों में स्वयं को 'आधुनिक' सिद्ध करने की होड़ सी लगी है। डॉ. पांडुरंग पाटिल जी के शब्दों में - ''स्त्री स्वातंत्र्य, धन लालसा, फॅशन परस्ती आदि बातों के कारण फ्री लव्ह और फ्री सेक्स के नाम पर उच्छृंखलता बढ़ रही हैं।... वेश्या व्यवसाय के नये रुप उजागर हो रहे हैं।''[2]

आधुनिक नारी जब यह देखती है कि पति का बर्ताव ठीक नहीं है तो वह विद्रोही बन जाती है। वह पति से झगड़ा करती है। 'अंधेरे से परे' की बिंदो शुरु में पति जित्तन को समझा बुझाकर कहती है। वह बार-बार समझाने के पीछे नहीं पड़ती है। बिंदो नौकरी के निमित्त होटल, क्लब, बार और परपुरुष से यौन संबंध रखती है। इसी की लालची होने के कारण अपने बच्चे से प्यार नहीं करती है। जित्तन कहता है - ''तुम हद से आगे बढ़ रही है।.... 'जो कुछ तुम कर रही हो वो ठीक है'

---

1. सुरेंद्र वर्मा - दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृष्ठ - 97
2. डॉ. पांडुरंग पाटिल - देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृष्ठ - 84

'मेरे लिए बेशक।''[1] अत: स्पष्ट है कि बिंदो पति की एक भी नहीं सुनना चाहती है। मधु और रोहित किसी काम से बाहर जाते है। तब वह गुलशन नामक युवक से संबंध स्थापित करती है। मधु भी अपनी बच्ची नीरु को घर छोड़कर क्लब तथा होटल में पार्टी के लिए जाती है। नलिनी अट्ठाईस साल की लड़की है। वह शादी की उम्र होते हुए भी शादी नहीं करना चाहती। वह ऐसे युवक के इंतजार में है जो उसे पसंद हो। इतना ही नहीं वह समय काटने के लिए गुलशन को गार्डन में ले जाती है। वह कहती है कि ''क्या यहाँ हम ऑफिस को डिस्कस करने के लिए आए है ?''[2] कहना आवश्यक नहीं कि नलिनी अपनी इच्छापूर्ति के लिए गुलशन के करीब आती है।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा का आधुनिकता के प्रभाव के कारण अपना नाम बदलना, नाटक और फिल्म में काम करना, अनेक युवकों के साथ संबंध रखना, लेस्बियन सम्बन्धो के बीच के प्रगाढ़-चुंबन करना नाइटी पैंटी प्रेम करना, कुँवारी माता, विवाह संस्था का विरोध, स्वच्छंद नारी, स्मृतियों के सहारे जीवन यापन करनेवाली, मुक्ति की तलाश में आदि वर्षा जो कुछ करती है वह आधुनिकता के तहत आता है। आज की पीढ़ी क्लब पार्टियों के आधीन होती जा रही है, जैसे - ''मार्च की दोपहर के बारह बज रहे थे। खिंचे हुए पर्दों और वातानुकूलन के कारण बाहर की तेज धूप का एहसास नहीं हो पा रहा था, पर थी तो दोपहर ही। ऐसे में घूँट भरना सिलबिल को अजीब-सा लगा।''[3] अत: स्पष्ट है कि अब पार्टियाँ रात में ही नहीं दिन में भी मनाई जाती है। वर्षा, दिव्या, शिवानी, अनुपमा तथा रीटा आदि के साथ लेस्बियन किस्म के संबंध रखती है। लेस्बियन संबंधों के बीच के प्रगाढ़ चुंबन तथा नाइटी पैंटी प्रेम आदि संबंध को लेकर भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव किस तरह हावी है इसका संकेत मिलता है। हर्ष की मृत्यु के बाद गर्भ में पल रहे बच्चे को जन्म देने का वर्षा का निर्णय भी आधुनिकता की तहत लिया गया है।

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास की शालू युवकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। वह क्लब में नाच-गाना करती है। पाँवों से गले तक ढ़की शालू मंचपर आती है और शरीर पर होनेवाला एक-एक वस्त्र निकाल देती है। ऐसे रंगीन

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 108
2. वही, पृष्ठ - 123
3. सुरेंद्र वर्मा - मुझे चाँद चाहिए, पृष्ठ - 145

रंगों में बह जाना एक फैशन हो गई है। यास्मीन, पारुल, किरण अपनी यौन तृप्ति के लिए परपुरुष से ओवरटाइम के भी पैसे देती है। श्रीमती दस्तूर विधवा नारी है। अकेलेपन को काँटने के लिए पाँच हजार रुपये प्रतिमास तनख्वाह पर श्रीमती दस्तूर द्वारा नियुक्त किया जाता है। उच्चशिक्षित महिला श्रीमती दस्तूर आधुनिक नारी है। आज बड़े-बड़े होटल, क्लब, बीअर-बार तथा रेस्तराँ आदि जगह प्रेम-प्रेमिका को पनाह देती है। देशी-विदेशी संगीतों का आस्वाद लेते हुए ये औरतें अपनी रात क्लब में गँवाती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में नशापान, क्लब, रेस्तराँ में जाकर ऐश करनेवाली नारियों के दर्शन होता है। निष्कर्षत: आधुनिक नारी परम्परागत मर्यादा का अंत एंव स्वतंत्रता के नाम पर उन्मुक्त काम को सहज स्वीकार कर लेती है। सार यह कि विवेच्य उपन्यासों में कामभावना की अधिकता को पर्याप्त मात्रा में चित्रित किया गया है।

3.3.9 उत्तरदायित्वहीन एवं खुदगर्ज नारी :

नारी में जैसे त्याग, समर्पण, ममता आदि गुण होते हैं उसी तरह कई नारियों में मोह, उत्तरदायित्वहीन स्वार्थी, लालसा आदि दुर्गुण भी दिखाई देते हैं। वर्तमान युग में शिक्षा के कारण नारी में इस तरह परिवर्तन आ रहा है।

'अंधेरे से परे' इस उपन्यास की नारी बिंदो, चित्रा खुदगर्ज है। जित्तन और बिंदो पति-पत्नी है उन दोनों में बार-बार झगड़ा होता है। जब जित्तन मित्र मुकुंद के घर जाता है। तब सोमू बहुत रोता है और पापा आने पर खुशी से दौड़ता है। लेकिन दादी और ममा उसको दबोच लेती है। गुल्लू की माँ जित्तन को घर बुला लेती है लेकिन यह बात बिंदो को अच्छी नहीं लगती। पति होकर भी उसके प्रति आदरभाव नहीं है। पापा घर में होने के कारण सोमू बहुत रोता है - तब बिंदो बेबाकी से बोलती है - "दो टूक ढंग से, अगर रोना उसकी किस्मत में ही लिखा है, तो क्या कर सकता है कोई ?"[1] अत: स्पष्ट है कि आज कल माँ और बच्चे में लगाव दिखाई नहीं देता हैं। बिंदो अपने बच्चे से इतना प्यार नहीं करती जितना जित्तन करता है। लेकिन बिंदो

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 153

मात्र बच्चे से उम्मीद रखती है कि 'बच्चा माँ से प्यार करें।' और कहती है उसे पापा या ममी में से किसी एक को चुनना चाहिए।

मुकुंद 'गोल्ड स्टार ट्रांसपोर्ट' शिमला ऑफिस में जित्तन के लिए नौकरी का इंतजाम करवाता है। जित्तन नौकरी करने के लिए तैयार होता है। पति जाते समय बिंदो कहती है - ''अब जाने से पहले थोडा-सा नाटक भी नहीं होगा क्या?''[1] अत: स्पष्ट होता है कि बिंदो एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देती। हर वक्त पति से नफरत करती है। सोमू जित्तन जाने से बहुत रोता हैं लेकिन बिंदो उस तरफ देखती ही नहीं - ''ठीक है। रोना अच्छा है अभी।' वही तीखापन बिंदो के स्वर में था, 'रो लेगा, तो जल्दी समझ लेगा।' ''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि बिंदो निर्दयी बन गयी है। बिंदो का मानना है जित्तन आये दिन तमाशे करता रहता है, सोमू बाप के बगैर एक मिनट भी नहीं रहता है। यह बात बिंदो को पसंद नहीं है। जित्तन घर छोड़कर चला जाता है। इस पर बिंदो ममा से कहती है - ''आज से कम से कम एक साल पहले हो जाना चाहिए था ।''[3]

प्रस्तुत उपन्यास की चित्रा भी खुदगर्ज नारी है। उसे दूसरों का घर उजाड़ने में खुशी होती है। जित्तन बिंदो से झगड़ा करके आता है तो चित्रा उसे अपने घर में पनाह देती है। इसके पीछे उसका स्वार्थ दिखाई देता है ''पता नहीं, आप क्यों नहीं समझते ? कल जिस तरह वो पिये जा रहे थे, मुझे तो उसी से लगा था कि ...''[4] अत: स्पष्ट है कि स्त्री ही स्त्री की शत्रू होती है। समाज में एक आदत ही पड़ गयी है कि पति अगर पत्नी से झगड़ा करके आता है तो दोषी पत्नी को ठहराया जाता है। आज की नारी पहले अपना सोचती है और फिर दूसरों का।

बिंदो इतना खुदगर्ज बन गयी है कि सोमू को प्यार नहीं करती है लेकिन उससे उम्मीद रखती है कि पापा से ज्यादा वह ममा से प्यार करे इसलिए वह सोमू को जबरदस्ती पास लेती है। उसके बाल मन पर उसकी मम्मा कितनी प्यारी है यह दिखाने का प्रयत्न करती है। अगर सचमुच ममा सोमू से प्यार करती होगी तो इतना सब कुछ

---

1. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 169
2. वही, पृष्ठ - 170
3. वही, पृष्ठ - 171
4. वही, पृष्ठ - 160

कहने की क्या जरूरत है बच्चे अपने आप समझ जाते है। निष्कर्षत: स्पष्ट है कि वर्तमान युग की आधुनिक नारी स्वार्थी, खुदगर्ज, उत्तरदायित्वहीन बनती जा रही है।

3.3.10 स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली नारी :

आज आर्थिकता से स्वतंत्र बनी नौकरी पेशावाली नारी अपने अस्तित्व के प्रति सज़ग दिखाई देती है। घर बाहर वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करने लगी है। राहुल भारद्वाज के शब्दों में ''आधुनिक शिक्षा-दीक्षा, आर्थिक, सामाजिक स्वतंत्रता से स्त्री आत्मनिर्भर हो चुकी है। वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्राप्त करने के लिए कई स्तरों पर युध्द की मुद्रा में दिखायी देती हैं ।''[1]

'अंधेरे से परे' उपन्यास में लेखक ने बिंदो, मधु तथा नलिनी के द्वारा स्वतंत्र अस्तित्ववादी नारी का चित्रण किया है। बिंदो पढ़ी-लिखी नारी होने के कारण पति की नौकरी चली जाने के बाद घर की जिम्मेदारी उठाकर वह नौकरी कर अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान करा देती है। बिंदो सहेली लतिका के पिता जी से कहकर जित्तन के लिए नौकरी का इंतजाम करती है। घर में पति होते हुए भी वह परपुरुष के संपर्क में आती है। बिंदो देर रात में घर आती है तब जित्तन भी नहीं सोया था। पति होने के कारण जब वह उसे पूछता है कि इतनी रात में कहाँ से आ रही हो तब बिंदो बड़ी आवाज में कहती हैं - '' 'चिखो मत। मुझे उँची आवाज की आदत नहीं है।' ''[2] अत: स्पष्ट है कि जित्तन बिंदो को अपनी जगह दिखता है लेकिन बिंदो उसकी बात मानती नहीं है। वह कहती है मुझे जो ठीक लगता है वही मैं करुँगी। परिवार तथा समाज में वह अपना अलग अस्तित्व दिखाती है। बिंदो शरीर उपभोग करने के लिए विवश है। वह अपनी माँ से कहती है - ''मैं विवश हूँ, मैं अपनी भावनाओं का कुछ नहीं कर सकती ।''[3] बिंदो के कथन से स्पष्ट होता है कि आज की नारियाँ परिस्थिति के कारण काम-वासना की शिकार हो रही है। बिंदो, मधु, नलिनी को स्वतंत्रता की होड़ ने पागल बना दिया है। नलिनी इतवार के दिन हॉस्टल के पास 'जू' में मिलने के लिए गुल्लू को बुला लेती है। जहाँ नलिनी छुट्टी के दिन अक्सर आती जाती थी।

---

1. राहुल भारद्वाज - नवें दशक की हिंदी कहानी में मूल्य-विघटन, पृष्ठ - 7
2. सुरेंद्र वर्मा - अंधेरे से परे, पृष्ठ - 147
3. वही, पृष्ठ - 102

मधु भी अपने पति के साथ कंपनी के काम के संदर्भ में बाहर आती-जाती है। अब नारी भी पुरुष के समान अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान बनाने लगी है वह किसी की गुलाम बनकर रहना पसंद नहीं करती। डॉ. पुष्पपाल सिंह के शब्दों में - ''वह हर क्षेत्र में केवल पति की अनुगामिनी, मात्र उसी के सुख-स्वप्नों को पालने वाली, खरीदी हुई गुलाम बनने को कतई तैयार नहीं है ।''[1]

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा वशिष्ठ के माध्यम से स्वतंत्र अस्तित्वादी नारी का दर्शन होता है। वर्षा की इच्छा शक्ति प्रबल होने के कारण वह परिवारवालों का विरोध सहकर नाटक और फिल्म क्षेत्र में अपनी अलग पहचाना बनाती है। वर्षा के सभी निर्णय स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान करनेवाले हैं, जैसे - नामान्तरण करना, परिवारवालों के विरोध करने पर नाटक और फिल्म में काम करना, अनेक युवकों के साथ संबंध रखना, विवाहपूर्व मातृत्व का स्वीकार करना आदि। वर्षा किसी के बने-बनाए रास्तों पर चलना पसंद नहीं करती। कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'सौम्यमुद्रा' का अभिनय तथा 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' के साक्षात्कार के लिए परिवार से विद्रोह कर दिल्ली पहुँचती है। अपने अस्तित्व को बनाने की होड़ ने उसे पागल बना दिया है। उसे 'जलती-जमीन' फिल्म के लिए सर्वोत्कृष्ट अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान के लिए उसे संघर्ष का सामना करना पड़ता है। वह एक-एक पैदान पर अपने अस्तित्व का झंडा लहराती है। निष्कर्षत: कहना आवश्यक नहीं कि वर्मा जी ने परंपरा से कैद नारी को मुक्त कर सफलता के सिंहासन पर विराजमान किया है।

सुरेंद्र वर्मा जी ने विवेच्य उपन्यासों में नारी के अन्य रूप प्रस्तुत किए हैं जिनका प्रसंगानुसार चित्रण हुआ है, जैसे-आत्मनिर्भर नारी, नशापान करनेवाली नारी, महानगरीय जीवन से जुड़ी नारी, संवेदनशील नारी, आधुनिकता का अनुकरण करनेवाली नारी, रूढ़ी और परंपरा का त्याग करनेवाली नारी, पाश्चात्य सांस्कृति के प्रति आकर्षित नारी, भविष्य के प्रति सोचनेवाली नारी, संकल्पशील नारी, कर्तव्यपरायण नारी आदि। इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा जी ने आधुनिक नारी जीवन का विस्तृत चित्र खिंचा है।

---

1. डॉ.पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी - युगबोध का संदर्भ, पृष्ठ - 149

निष्कर्ष :

सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन के यथार्थ को रेखांकित किया है। समाज जीवन का महत्त्वपूर्ण पक्ष नारी है। पुरुष की जीवन संगीनी के रुप में भी नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। प्रारंभ में नारी का कार्यक्षेत्र चूल्हा एवं बच्चों का पालन पोषण करने तक ही सीमित था। लेकिन समाजसुधारकों, शिक्षा प्रसार तथा साहित्यकारों के कारण आज की नारी अपने जीवन के अनावश्यक बन्धन तोड़ने के लिए प्रयत्नशील रही है। अत: आज समाज का केंद्रबिन्दू बनी नारी को वर्मा जी ने अपने आलोच्य उपन्यासों में विविध रुपोंद्वारा अभिव्यक्त किया है।

विवेच्य उपन्यासों में वर्मा जी ने दाम्पत्य जीवन, स्वतंत्र अस्तित्व की धारणा आदि का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही विवाहपूर्व एवं विवाहबाह्य अवैध-यौन संबंध रखनेवाली नारी, आधुनिक नारी आदि अनेक नारी को यथार्थता के साथ वर्मा जी ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। पति की निष्क्रियता के कारण दाम्पत्य जीवन में बिगाड़ आ रहा है। ये नारियाँ क्लब, बार, होटेल में जाकर अन्य पुरुषों के साथ रंगरलियाँ मानती है। आज की नारी स्वच्छंदी वृत्ति की है। वह विवाहपूर्व और विवाह बाह्य संबंध रखने में तनिक भी हिचकिचाती नहीं है। सुरेंद्र वर्मा के विवेच्य उपन्यास इसके प्रमाण है। ये नारियाँ पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करती हुई दिखाई देती है। अब नारियाँ विवाह बंधन को अस्वीकार करके विवाहपूर्व मातृत्व को स्वीकारना पसंद करती है। आज की नारी पर आधुनिक शिक्षा का प्रभाव नजर आता है। वह स्वतंत्र बनकर समाज के सामने जीति हुई नजर आ रही है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित कई नारियाँ अपने कैरियर के पीछे पड़ी हुई तो कई नारियाँ परंपरागत बंधनों को तोड़ने के लिए तथा उन्मुक्त यौन संबंध रखने के लिए लालायित है। विवेच्य उपन्यासों में तलाक पीड़ित नारी के दर्शन भी होते हैं। परिवार में कलह होने के कारण बच्चों तथा पति के प्रति आज की नारी में उदासीनता दिखाई देती हैं। इन नारियों के बीच परंपरा और आधुनिकता के बारे में संघर्ष के दर्शन होते हैं।

'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा 'अंधेरे से परे' की बिंदो और मधु 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की सभी नारियाँ स्वच्छन्द प्रकृति के पात्र है। उनके सम्मुख अपनी देह तृप्ति की एक मात्र लालसा है, जिसका शमन करने में उनके प्रति अक्षम है। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा माँ बनना चाहती है और वासना से पूरित सारे आदर्शों एवं परम्परागत मूल्यों से चिढ़कर विद्रोह की भूमि पर नैतिकता को चुनौती देती हुई 'नई चेतना' का मंत्र-जाप करती है। साथ ही अपने अस्तित्व एवं व्यक्ति स्वातंत्र के मूल्यों को भी महत्त्व देती है। 'अंधेरे से परे' की बिंदो और मधु अपने बच्चों के प्रति विरक्ति प्रकट करती है। बिंदो स्वार्थी स्वभाव की है। इस स्वार्थ में यह नारी अपने रिश्तों को भूलकर सिर्फ अपने लाभ का विचार करती है।

वर्मा जी ने अपनी रचनाओं में अनेक स्वानुभूत सच्चाईयों को उजागर किया है। पाश्चात्य संस्कृति की परंपरागत दहलीज को लाँघने लगी है। आज पुराने नारी मूल्य उद्धवस्त होते जा रहे हैं। आज की नारी परंपरा और आधुनिकता के बीच फँसी हुई नजर आती है। कहना आवश्यक नहीं कि वर्मा जी ने नारी-जीवन के जिस रुपों को चित्रित किया है वह निश्चय ही कई मात्रा में पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण है।

सारांशत: कहना होगा कि लेखक एक पुरुष होते हुए भी नारी के हर रूप का अत्यंत सूक्ष्मता तथा सजगता से चित्रण किया है। महानगरीय परिवेश से जुड़े नारी का यथार्थ चित्रण भी उन्होंने किया है। कहीं-कहीं आदर्शात्मक नारी रूपों का चित्रण भी हुआ है। लेकिन उसमें भी यथार्थता है। अत: यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि वर्मा एक यथार्थवादी लेखक है और वह नारी के सभी अंगों का वास्तव चित्रण करने में पूर्णत: सफल बने हैं। इस दृष्टि से सुरेंद्र वर्मा जी एक सफल उपन्यासकार रहे हैं।

❑❑❑❑